भारतीय वैश्विक परिषद

समाचार पत्रक

अंक : 28 | जनवरी - मार्च, 2022

31 मार्च 2022 को आयोजित प्रथम भारत-यू.के. स्ट्रैटेजिक फ्यूचर्स फोरम में बायें से दायें: माननीय डॉ. एस. जयशंकर, विदेश मंत्री, भारत सरकार, लॉर्ड डीन गोडसन, निदेशक, नीति विनिमय, माननीय एलिजाबेथ ट्रस, सांसद, विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास मामलों की मंत्री, यूनाइटेड किंगडम

मुख्य विशेषताएं

- तृतीय भारत-उज्बेकिस्तान थिंक टैंक फोरम 19 जनवरी, 2022 को आयोजित किया गया था। उद्घाटन सत्र को राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए; राजदूत दनियार कुर्बानोव, निदेशक, सीआईआरएस; उज्बेकिस्तान में भारत के राजदूत मनीष प्रभात ने संबोधित किया।
- "भारत-रूस के रणनीतिक दृष्टिकोण और विश्व व्यवस्था में परिवर्तन" पर आईसीडब्ल्यूए-आरआईएसी संवाद वस्तुतः 28 जनवरी 2022 को आयोजित किया गया था। यह उद्घाटन सत्र के साथ शुरू हुआ जहां राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. एंड्री कोर्तुनोव, डीजी, आरआईएसी, श्री रोमन बाबुश्किन, उप प्रमुख, भारत में रूसी दूतावास; और सुश्री जीना उड़का, मिशन की उप प्रमुख, रूस में भारतीय दूतावास द्वारा अपने विचार व्यक्त किये गये।

विदेश सचिव श्री हर्षवर्धन श्रृंगला, प्रथम भारत-यू.के. स्ट्रैटेजिक फ्यूचर्स फोरम में, 31 मार्च, 2022

- 10 मार्च 2022 को, आईसीडब्ल्यूए ने डोमिनिकन गणराज्य, कोस्टा रिका, अल सल्वाडोर, ग्वाटेमाला और पनामा के मिशन प्रमुखों की भागीदारी के साथ 'भारत और एसआईसीए राष्ट्रों के मध्य संबंध' विषय पर राजदूतों की पहली गोलमेज चर्चा की मेजबानी की।

10 मार्च 2022 को एसआईसीए राजदूतों के गोलमेज सम्मेलन में बोलते हुए राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए

- विदेश मंत्रालय और विदेश, राष्ट्रमंडल एवं विकास कार्यालय, यूनाइटेड किंगडम तथा पॉलिसी एक्सचेंज, यूके के सहयोग से भारतीय वैश्विक परिषद ने 30-31 मार्च 2022 को भारत-यूके स्ट्रैटेजिक फ्यूचर्स फोरम (आईयूएसएफएफ) के प्रथम संस्करण का आयोजन किया। 31 मार्च 2022 को आयोजित आईयूएसएफएफ का मुख्य आकर्षण 'डॉ. एस. जयशंकर, विदेश मंत्री, भारत सरकार और माननीय एलिजाबेथ ट्रस सांसद, विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास मामलों की मंत्री तथा प्रथम सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट, यूनाइटेड किंगडम की वार्ता' रहा।

31 मार्च 2022 को प्रथम भारत-यू.के. स्ट्रैटेजिक फ्यूचर्स फोरम में उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार विक्रम मिश्री

विषय-सूची

तृतीय भारत-उज्बेकिस्तान थिंक टैंक फोरम, 19 जनवरी 2022 4

आईसीडब्ल्यूए-आरआईएसी संवाद, 28 जनवरी 2022 5

आईओआरए बैठक, 04 फरवरी 2022 6

"संयुक्त राष्ट्र शांति अभियान: महिला, शांति और सुरक्षा" पर शांति स्थापना पर आईसीडब्ल्यूए-यूएसआई वेबिनार की पांचवीं श्रृंखला, 09 फरवरी 2022 7

सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) चर्चा, 18 फरवरी 2022 8

'दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में चीन के बीआरआई' पर अभिविन्यास व्याख्यान, 22 फरवरी 2022 8

तृतीय इंडो-जर्मन ट्रैक 1.5 डायलॉग, 24 फरवरी 2022 9

'अरब वर्ल्ड इन ट्रांजिशन एंड द क्वेस्ट फॉर ए न्यू रीजनल ऑर्डर' नामक पुस्तक का ऑनलाइन विमोचन और पैनल चर्चा, 02 मार्च 2022 9

08 मार्च 2022 को डीजी, आईसीडब्ल्यूए से प्रो. एघोसा ई ओसाघे, महानिदेशक, डीजी, नाइजीरियाई अंतर्राष्ट्रीय मामलो के संस्थान (एनआईआईए) की भेंट 10

राजदूतों की गोलमेज परिचर्चा, 'भारत और सीका देशों के बीच संबंध', 10 मार्च 2022 11

भारत-यूके स्ट्रैटेजिक फ्यूचर्स फोरम, 30-31 मार्च 2022 12

आउटरीच कार्यक्रम 14

प्रकाशन 16

इंडिया क्वार्टरली सम्पादकीय 19

"आसियान और म्यांमार में राजनीतिक संकट" पर वेबिनार,
01 अक्टूबर 2021

आईसीडब्ल्यूए ने सेंटर फॉर इंटरनेशनल रिलेशंस स्टडीज (सीआईआरएस), ताशकंद के सहयोग से 19 जनवरी 2022 को वर्चुअल मोड में तृतीय भारत-उज्बेकिस्तान थिंक टैंक फोरम की मेजबानी की।

तीन विषयों (क) 'द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी के एजेंडे के प्राथमिक निर्देश - हरित विकास और डिजिटलीकरण'; (ख) 'व्यापार और आर्थिक संबंधों के विकास की संभावनाएं'; और (ग) 'सामाजिक संबंधों का निर्माण' के तहत चर्चा सम्पन्न हुई। विद्वानों और पूर्व राजनयिकों ने भारत और उज्बेकिस्तान दोनों के थिंक टैंक, विश्वविद्यालयों और उद्योग मंडलों का प्रतिनिधित्व करते हुए इस संवाद में भाग लिया।

उद्घाटन सत्र को राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए; राजदूत दनियार कुर्बानोव, निदेशक, सीआईआरएस; उज्बेकिस्तान में भारत के राजदूत मनीष प्रभात; भारत में उज्बेकिस्तान के राजदूत दिलशोद अखतोव ने संबोधित किया। राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि यह बैठक ऐसे समय में हो रही है जब मध्य एशियाई राज्यों के साथ भारत का जुड़ाव 30 साल के राजनयिक संबंधों के मील के पत्थर तक पहुंच गया है। उन्होंने उल्लेख किया कि पिछले साल अगस्त से अफगानिस्तान में किसी भी ठोस रचनात्मक विकास की कमी भारत और मध्य एशिया दोनों के लिए चिंता का कारण रही है। राजदूत कुर्बानोव ने कहा कि राजनीतिक संवाद का विकास और भारत के साथ पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंधों को बढ़ावा देना उज्बेकिस्तान की विदेश नीति और विदेशी आर्थिक गतिविधि की एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता बन गई है। राजदूत प्रभात ने कहा कि दोनों पक्षों के नेताओं की ओर से इस संबंध को और विकसित करने का स्पष्ट निर्देश है। राजदूत अखतोव ने उल्लेख किया कि दोनों देशों के नेताओं के बीच गहन राजनीतिक संवाद के परिणामस्वरूप पिछले कुछ वर्षों में भारत और उज्बेकिस्तान के बीच संबंध नई ऊंचाइयों पर पहुंचे हैं। यह बहुआयामी साझेदारी महामारी के दौरान भी सक्रिय रही।

प्रथम सत्र का संचालन राजदूत अशोक सज्जनहार, अध्यक्ष, वैश्विक अध्ययन संस्थान ने किया, और पैनलिस्ट थे: डॉ. बख्तियार मुस्तफायेव, उप निदेशक, मध्य एशिया के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थान; राजदूत फुंचोक स्टोबदान, सीनियर फेलो, दिल्ली पॉलिसी ग्रुप; श्री तैमूर राखिमोव, मध्य एशिया के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थान विभाग के प्रमुख; प्रो. अजय पटनायक, पूर्व डीन और प्रोफेसर स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय तथा श्री सरवरजोन कामोलोव, उज़्बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति के अधीन सामरिक और अंतर्क्षेत्रीय अध्ययन संस्थान के मुख्य शोधकर्ता। इस सत्र में मध्य एशिया में हरित विकास में भारत की भूमिका पर चर्चा हुई। आईटी पर द्विपक्षीय सहयोग और डिजिटल क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर भी चर्चा हुई।

द्वितीय सत्र का संचालन इंस्टीट्यूट ऑफ फोरकास्टिंग एंड मैक्रोइकॉनॉमिक रिसर्च, उज्बेकिस्तान के निदेशक डॉ. उमिद आबिधजाव ने किया। पैनलिस्टों में शामिल रहे : उज्बेकिस्तान में पूर्व भारतीय राजदूत स्कंद तायल; विकास रणनीति केंद्र, उज़्बेकिस्तान के निदेशक डॉ. एल्डोर टुल्याकोव; उज़्बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति के प्रशासन के तहत आर्थिक अनुसंधान और सुधार केंद्र के मुख्य शोधकर्ता डॉ. नोदिरा कुर्बानबायेवा; निदेशक और प्रमुख-यूरोप और सीआईएस, फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री श्री रोहित शर्मा; वर्ल्ड इकोनॉमी एण्ड डिप्लोमेसी यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर और राजदूत आई. मावल्यानोव। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि तरजीही व्यापार समझौते और द्विपक्षीय निवेश संधि के माध्यम से स्टार्ट-अप, कृषि, फार्मा आदि के बीच आर्थिक संबंधों और सहयोग को और अधिक बढ़ाया जा सकता है। उज्बेकिस्तान चाबहार बंदरगाह को विकसित करने और आईएनएसटीसी से जोड़ने की भारत की योजना का समर्थन करता है और भारत, ईरान तथा उज्बेकिस्तान के बीच परिवहन और

रसद सहयोग के विकास का समर्थन करता है।

तृतीय सत्र का संचालन उज्बेकिस्तान में पूर्व भारतीय राजदूत स्कंद तायल ने किया, और पैनलिस्ट थे: श्री गैर-सरकारी संस्थान "कारवां ऑफ नॉलेज" के निदेशक फरखाद तोलीपोव; स्कूल ऑफ लैंग्वेज, लिटरेचर एंड कल्चर स्टडीज, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के प्रो. अखलाक अहमद 'अहान', ख़यदारोव, ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ ओरिएंटल स्टडीज़ में प्रोफेसर राजदूत अब्दुस्समत; पश्चिम और मध्य एशिया केंद्र, तिलोटोमा फाउंडेशन की प्रमुख डॉ. मीना सिंह रॉय; पूर्व प्रमुख, पश्चिम एशिया केंद्र, एमपी-आईडीएसए। यह उल्लेखनीय रहा कि दोनों देशों के लोगों के बीच एक बहुत मजबूत नींव, ऐतिहासिक सद्भावना और मित्रता है, जिसे मध्य एशियाई और दक्षिण एशियाई क्षेत्रों पर केंद्रित अनुसंधान के लिए विद्वानों को अनुदान देने जैसी नई और नवीन पहलों के साथ शिखर तक ले जाने की आवश्यकता है।

आईसीडब्ल्यूए-आरआईएसी वार्ता, 28 जनवरी 2022

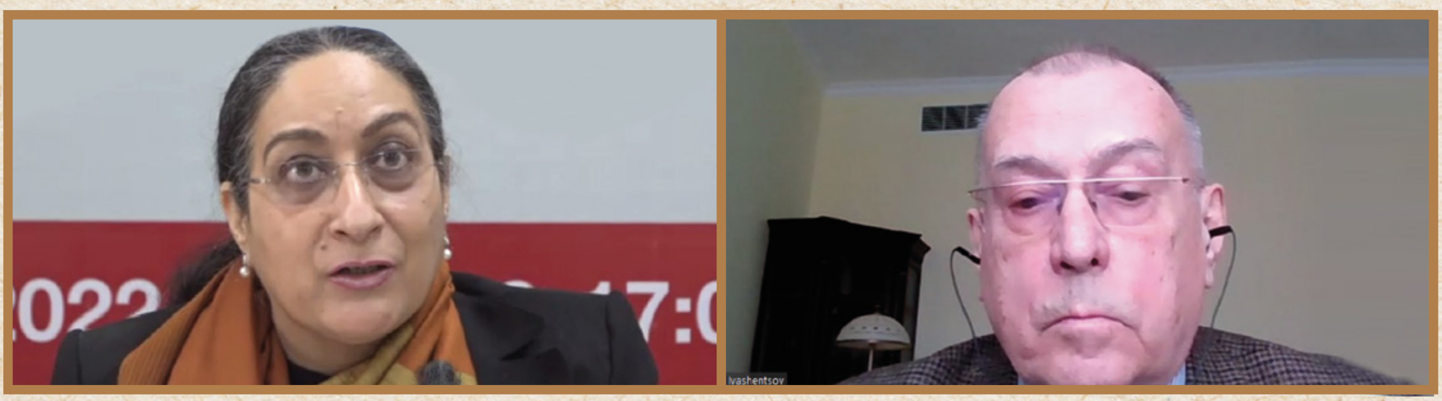

आईसीडब्ल्यूए ने रूसी अंतर्राष्ट्रीय मामलों की परिषद (आरआईएसी) के सहयोग से 28 जनवरी 2022 को "रूस-भारत संबंधों के रणनीतिक दृष्टिकोण और विश्व व्यवस्था में परिवर्तन" पर एक वर्चुअल संवाद का आयोजन किया गया। यह संवाद कोविड के बाद की दुनिया में भारत और रूस के लिए वैश्विक और क्षेत्रीय रणनीतिक गतिशीलता और द्विपक्षीय प्राथमिकताओं पर केंद्रित था। यह उद्घाटन सत्र के साथ शुरू हुआ जिसमें राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. एंड्री कोर्तुनोव, डीजी, आरआईएसी, श्री रोमन बाबुश्किन, भारत में रूसी दूतावास के उप प्रमुख; और सुश्री जीना उइका, रूस में भारतीय दूतावास की उप प्रमुख ने अपने विचार व्यक्त किए।

उद्घाटन सत्र में, वक्ताओं ने आईसीडब्ल्यूए-आरआईएसी वार्ता के महत्व को रेखांकित किया और सराहना की कि यह भारत-रूस संबंधों पर काम करने वाले प्रतिबद्ध बुद्धिजीवियों को एक साथ लाता है। प्रतिभागियों ने दोहराया कि भारत और रूस अंतरराज्यीय मित्रता का एक अनूठा और विश्वसनीय मॉडल साझा करते हैं जो समय की कसौटी पर खरा उतरता है और दीर्घकालीन है। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि विश्व व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव और आने वाली वैश्विक और क्षेत्रीय चुनौतियों के बीच, भारत और रूस राजनीतिक तथा रणनीतिक, अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, रक्षा और सुरक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और संस्कृति सहित विभिन्न क्षेत्रों में बहुआयामी सहयोग में संलग्न हैं।

वार्ता का पहला स्तर "वैश्विक एजेंडा: रूस और भारत के साझा और अलग-अलग हित" पर केंद्रित था। पैनल की अध्यक्षता राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष और रूस में पूर्व राजदूत पी.एस. राघवन ने की। एमजीआईएमओ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सर्गेई लुनेव और ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ओआरएफ) के विशिष्ट फेलो श्री नंदन उन्नीकृष्णन द्वारा विचार व्यक्त किए गए। यह कहा गया कि चूंकि दोनों देश बदलते वैश्विक परिदृश्य और राष्ट्रीय हितों की खोज में अपने व्यक्तिगत मुद्दों से निपटते हैं, उन्होंने एक स्वतंत्र विदेश नीति कायम रखी है। हालांकि इसके परिणामस्वरूप कुछ अपरिहार्य विचलन हुए हैं, किन्तु दोनों पक्ष इस तरह से कार्य नहीं करते हैं जो दूसरे के हित में न हो। एक दूसरे के मूल सरोकारों के बारे में दोनों पक्षों में आपसी समझ और विचार हैं।

दूसरा सत्र "भारत की इंडो-पैसिफिक रणनीति और रूस का दृष्टिकोण" पर आधारित था। आरआईएसी के उपाध्यक्ष राजदूत ग्लीब इवाशंत्सोव ने सत्र की अध्यक्षता की। इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज, रशियन एकेडमी ऑफ साइंसेज से पद्म श्री पुरस्कार विजेता प्रो. तातियाना शौमयान, नेशनल मैरीटाइम फाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक कैप्टन सरबजीत एस. परमार; आरएएस इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज में रिसर्च फेलो डॉ एलेक्सी ज़खारोव; और ओआरएफ के फेलो डॉ. विवेक मिश्रा ने अपने विचार साझा किए। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि बदलते वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य ने हिंद महासागर क्षेत्र को एक नई गति दी है और इसके राजनीतिक और आर्थिक महत्व को बढ़ाया है। भारत-प्रशांत के बारे में भारत का दृष्टिकोण समावेशी है और चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारे पर सहयोग की संभावनाओं, रूसी सुदूर पूर्व में सहयोग, और समुद्री संसाधनों जैसे क्षेत्रों में संभावित सहयोग और समुद्री पारिस्थितिकी को प्रोत्साहित करते हुए इस क्षेत्र में वह रूस को एक महत्वपूर्ण समुद्री भागीदार के रूप में देखता है।

संवाद के अंतिम सत्र में कोविड के बाद की दुनिया में भारत-रूस के लिए द्विपक्षीय प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित किया गया और इसकी अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज की पूर्व डीन प्रो अनुराधा एम. चेनॉय ने की। पैनलिस्टों में स्कोल्कोवो इंस्टीट्यूट फॉर इमर्जिंग मार्केट्स के डॉ. लिडिया कुलिक; तक्षशिला संस्थान से श्री नितिन पई, एमजीआईएमओ विश्वविद्यालय से डॉ नतालिया गैलिस्टचेवा,; गेटवे हाउस से श्री अमित भंडारी, एमजीआईएमओ विश्वविद्यालय से डॉ. अन्ना किरीवा, राष्ट्रीय उन्नत अध्ययन संस्थान की डीन प्रो. डी. सुबा चंद्रन शामिल थे। यह देखा गया कि दोनों पक्षों को भविष्य के उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, जिसमें साझेदारी के आर्थिक स्तंभ को बढ़ावा देने के लिए नई और उभरती प्रौद्योगिकियां शामिल हैं। रूसी सुदूर पूर्व और आर्कटिक में सहयोग के महत्व पर बल दिया गया।

दक्षिण अफ्रीका में हिंद महासागर रिम एकेडमिक समूह (आईओआरएजी) की अध्यक्षता सौंपने के लिए बैठक, 4 फरवरी 2022

आईओआरएजी की अध्यक्षता सौंपने के लिए भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच एक वर्चुअल द्विपक्षीय बैठक 4 फरवरी 2022 को आयोजित की गई थी। आईसीडब्ल्यूए ने आईओआरएजी के अध्यक्ष के रूप में भारत की गतिविधियों पर एक व्यापक रिपोर्ट प्रस्तुत की। आईसीडब्ल्यूए की निदेशक अनुसंधान डॉ. निवेदिता रे ने बैठक में विचार व्यक्त किए, जिसमें उन्होंने उल्लेख किया कि आईसीडब्ल्यूए/भारत ने वर्ष 2019-2021 से हिंद महासागर रिम एकेडमिक समूह (आईओआरएजी) की अध्यक्षता की थी। कार्यकाल की समाप्ति के बाद इसकी अध्यक्षता दक्षिण अफ्रीका को सौंप दी गई। आईओआरएजी की अध्यक्षता के दौरान आईसीडब्ल्यूए ने 6ठी हिंद महासागर वार्ता, 25वीं हिंद महासागर रिम एकेडमिक समूह (आईओआरएजी), 1982 यूएनसीएलओएस पर आईओआरए क्षमता निर्माण कार्यशाला, हिंद महासागर रिम एकेडमिक समूह या आईओआरएजी की 26वीं बैठक 8वीं हिंद महासागर वार्ता 2021 आयोजित की। आईसीडब्ल्यूए ने भविष्य में आईओआरएजी में योगदान करने के तरीकों का भी प्रस्ताव दिया।

संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों पर आईसीडब्ल्यूए-यूएसआई वेबिनार: महिला, शांति और सुरक्षा, 9 फरवरी 2022

संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों पर आईसीडब्ल्यूए-यूएसआई श्रृंखला के हिस्से के रूप में, 'महिला, शांति और सुरक्षा' पर 5वां वेबिनार 9 फरवरी 2022 को आयोजित किया गया था। वेबिनार में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद संकल्प (यूएनएससीआर) 1325 पर विचार-विमर्श किया गया, जिसमें शिक्षाविदों, चिकित्सकों और नागरिक शांति रक्षक के विचार शामिल थे। यूएसआई के उप निदेशक मेजर जनरल पीके गोस्वामी (सेवानिवृत्त) ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सशस्त्र संघर्ष पुरुषों और महिलाओं को अलग-अलग तरीकों से कैसे प्रभावित करता है क्योंकि बाद में भी उन्हें लिंग आधारित भेदभाव का सामना करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि महिला शांति रक्षक मेजबान देश में संघर्ष के बाद की व्यवस्था में महिलाओं के लिए एक शक्तिशाली संरक्षक और रोल मॉडल के रूप में काम करती हैं। उद्घाटन भाषण आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने दिया, जिन्होंने कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के व्यापक पैरामीटर के भीतर लिंग की भूमिका पर जोर देते हुए कहा कि इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है और महिला शांतिरक्षक और उनकी अनूठी समझ, अनुभव और उनकी क्षमताएं बेहतर शांति व्यवस्था के लिए अत्यन्त मूल्यवान हैं। वेबिनार का संचालन प्रो. यशी चोएडन, सीआईपीओडी, एसआईएस, जेएनयू द्वारा किया गया।

वेबिनार में पैनलिस्ट डॉ. तस्नीम मीनाई, प्रोफेसर और पूर्व निदेशक, नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कॉन्फ्लिक्ट रिजॉल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामिया, लेफ्टिनेंट कर्नल वैनेसा हनराहन, कार्यकारी सहायक कैनेडियन फोर्सेस प्रोवोस्ट मार्शल ऑफिसर कमांडिंग, कैनेडियन अफगान यूनिफॉर्म पुलिस टास्क फोर्स प्रोवोस्ट मार्शल, यूएन मिशन, दक्षिण सूडान, कमांडेंट पूनम गुप्ता, कमांडिंग 232 (महिला) बटालियन सीआरपीएफ और पूर्व कंटिंजेंट कमांडर आईएफपीयू, लाइबेरिया, डीआईजी सीमा धुंडिया, कंटिंजेंट कमांडर, लाइबेरिया के लिए पहली अखिल महिला गठित पुलिस यूनिट, मेजर सुमन गवानी, शांति रक्षक, यूएनएमआईएसएस, और डॉ. संग्या मल्ला एसपी, नेपाल पुलिस बल, यूएनपीओएल, कांगो शामिल थे। पैनलिस्टों ने संघर्ष क्षेत्र में महिलाओं की सुरक्षा और संयुक्त राष्ट्र के एजेंडे के कार्यान्वयन की चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया, जिसके तत्काल और दीर्घकालिक दोनों प्रभाव हैं। कई चुनौतियों पर चर्चा करते हुए, पैनलिस्टों ने संघर्ष और संघर्ष के बाद के पुनर्निर्माण में महिलाओं की भूमिका पर भी ध्यान दिया और शांति के सक्रिय एजेंटों के रूप में उनकी काफी हद तक अनजानी भूमिका पर प्रकाश डाला। समापन भाषण मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) बीके शर्मा, निदेशक, यूएसआई ने दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि शारीरिक, भावनात्मक और आर्थिक दृष्टि से संघर्ष की स्थिति के दौरान महिलाएं सबसे बुरी तरह प्रभावित होती हैं, लेकिन शांति निर्माण और संघर्ष समाधान पहल में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है।

"भारत-दक्षिण कोरिया रणनीतिक साझेदारी: एक नए क्षितिज की ओर" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) परिचर्चा, 18 फरवरी 2022

18 फरवरी 2022 को, आईसीडब्ल्यूए के रिसर्च फेलो डॉ. जोजिन वी. जॉन ने "भारत-दक्षिण कोरिया रणनीतिक साझेदारी: एक नए क्षितिज की ओर" पर सप्रू हाउस पेपर की ऑनलाइन परिचर्चा आयोजित की। बैठक की अध्यक्षता कोरियाई अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की प्रोफेसर प्रो. वैजयति राघवन ने की। डॉ जॉन द्वारा सप्रू हाउस पेपर की प्रस्तुति के बाद पूर्वी एशियाई केंद्र, एमपी-आईडीएसए, नई दिल्ली के रिसर्च फेलो और समन्वयक डॉ जगन्नाथ पांडा और इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन अफेयर्स एंड नेशनल सिक्योरिटी, कोरिया नेशनल डिप्लोमैटिक एकेडमी, रिपब्लिक ऑफ कोरिया के रिसर्च प्रोफेसर डॉ चो वोंडुक ने पेपर पर चर्चा की।

वेबिनार के दौरान, प्रतिभागियों ने बताया कि भारत-दक्षिण कोरिया के संबंध पिछले दो दशकों में व्यापक और बहुआयामी साझेदारी की विशेषता के कारण मजबूत हुए हैं। 2010 में रणनीतिक साझेदारी समझौते और 2015 में विशेष रणनीतिक साझेदारी पर हस्ताक्षर से संबंधों के विकास में नये आयाम तैयार हो रहे हैं। प्रतिभागियों ने कहा कि द्विपक्षीय संबंधों के संदर्भ में कोविड के बाद के अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में नए अवसर और चुनौतियाँ उपस्थित हुई हैं। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि भारत-प्रशांत क्षेत्र के उद्भव के साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में परिवर्तन द्विपक्षीय साझेदारी को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। हालांकि, यदि धारणा और उम्मीद के अंतराल को पर्याप्त रूप से समायोजित नहीं किया जाता है तो यह संबंधों की गतिशीलता को कमजोर भी कर सकता है।

'दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में चीन के बीआरआई' पर अभिविन्यास व्याख्यान, 22 फरवरी 2022

एसआईएस, जेएनयू, नई दिल्ली के डीन औरआईसीडब्ल्यूए की गवर्निंग काउंसिल के सदस्य प्रो. श्रीकांत कोंडापल्ली ने 22 फरवरी 2022 को आईसीडब्ल्यूए संकाय को संबोधित करते हुए वर्चुअल प्रारूप में 'दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में चीन के बीआरआई' पर एक अभिविन्यास व्याख्यान दिया। यह डॉ. संजीव कुमार, एसआरएफ, आईसीडब्ल्यूए द्वारा समन्वित विषय पर आईसीडब्ल्यूए की जारी परियोजना का हिस्सा था।

परियोजना की शुरुआत करते हुए, डॉ संजीव कुमार ने इस बात पर जोर दिया कि बीआरआई एक चीनी परियोजना है, चीन के नेतृत्व वाली परियोजना है। यह सही मायने में बहुपक्षीय परियोजना नहीं है। उन्होंने कहा कि चीन ने शुरू में कहा था कि बीआरआई एक आर्थिक परियोजना है, लेकिन हाल ही में इसके रणनीतिक पहलू स्पष्ट हो गए हैं।

अपने व्याख्यान में प्रो. कोंडापल्ली ने (i) बीआरआई के प्रेरकों के रूप में चीन के घरेलू कारकों के महत्व (ii) डेटा एकत्र करते समय उपयुक्त

कार्यप्रणाली और स्रोतों का उपयोग (बीआरआई से पहले और बाद में शुरू की गई परियोजनाओं के बीच भ्रम, क्योंकि अधिक लाभ दिखाने के लिए एक साथ समेकित किया गया है) (iii) बीआरआई के बारे में स्थानीय राय और चिंताएं; (vi) बीआरआई से जुड़ी शर्तों का अध्ययन करने; और (v) भारत के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। उनके व्याख्यान के बाद इस विषय पर स्पष्ट चर्चा हुई। डॉ. निवेदिता रे, निदेशक (अनुसंधान) ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

तीसरा इंडो-जर्मन ट्रैक 1.5 डायलॉग, 24 फरवरी 2022

विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस), नई दिल्ली के सहयोग से आईसीडब्ल्यूए ने 24 फरवरी, 2022 को अपने जर्मन समकक्षों - जर्मन इंस्टीट्यूट ऑफ ग्लोबल एंड एरिया स्टडीज (जीआईजीए) और स्टिफ्टंग विसेंशाफ्ट एंड पॉलिटिक (एसडब्ल्यूपी) के साथ तीसरी इंडो-जर्मन ट्रैक 1.5 वार्ता का आयोजन किया। स्वागत भाषण प्रो. डॉ अमृता नार्लीकर, अध्यक्ष, जीआईजीए और राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा दिया गया। मुख्य भाषण बर्लिन में भारतीय दूतावास की उप प्रमुख सुश्री रचिता भंडारी और अफगानिस्तान और पाकिस्तान के विशेष प्रतिनिधि तथा दक्षिण एशिया और भारत-प्रशांत नीति के उप महानिदेशक श्री जैस्पर विएक द्वारा दिया गया। विदेश और सुरक्षा नीति और; सतत विकास तथा व्यापार पर दो सत्रों में चर्चा की गई । संवाद चैथम हाउस रूल्स के बाद आयोजित किया गया था।

डॉ. फज्जुर रहमान सिद्दीकी द्वारा 2 मार्च 2022 को "अरब वर्ल्ड इन ट्रांजिशन एंड द क्वेस्ट फॉर ए न्यू रीजनल ऑर्डर" पर ऑनलाइन पुस्तक का विमोचन और पैनल परिचर्चा

आईसीडब्ल्यूए ने 2 मार्च 2022 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में डॉ. फज्जुर रहमान सिद्दीकी (सीनियर रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए) की नवीनतम पुस्तक "अरब वर्ल्ड इन ट्रांजिशन एंड द क्वेस्ट फॉर ए न्यू रीजनल ऑर्डर" पर एक ऑनलाइन पुस्तक का विमोचन और पैनल परिचर्चा आयोजित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजदूत संजय सिंह, पूर्व सचिव, विदेश मंत्रालय ने की जिसमें पैनलिस्ट के रूप में डॉ. वायल एस.एच. अवध, वरिष्ठ अंतरराष्ट्रीय स्वतंत्र पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक, डॉ. पी.के. प्रधान, एसोसिएट फेलो, एमपीआईडीएसए और डॉ. प्रिया सिंह, एसोसिएट डायरेक्टर, एशिया इन ग्लोबल अफेयर्स, कलकत्ता शामिल रहे।

पुस्तक के लिए लेखक को धन्यवाद देते हुए अध्यक्ष श्री सिंह ने टिप्पणी की कि पूरी दुनिया एक आदर्श बदलाव के लिए तैयार है और मध्य पूर्व इसका अपवाद नहीं है। उन्होंने रेखांकित किया कि यह पुस्तक हमें क्षेत्रीय आधिपत्य के लिए नए युद्ध; ईरान और सऊदी अरब के बीच परस्पर

क्रिया; तुर्की और वैश्विक शक्तियों की भूमिका; सत्तावाद और लोकतंत्र की ताकतों के बीच द्विभाजन; संक्रमण और संघर्ष की संभावनाओं; एक नए सामाजिक अनुबंध के नवीनीकरण, एक नई पहचान और क्षेत्र में राजनीतिक इस्लाम के विकास के बारे में बताती है। यह भारत के लिए निहितार्थों के बारे में भी बताती है।

अपनी प्रस्तुति में, डॉ. सिद्दीकी ने इस बात पर जोर दिया कि चर्चा के तहत यह पुस्तक एक दशक से अधिक समय से इस क्षेत्र में जो हो रहा है, उसमें एक अकादमिक हस्तक्षेप है। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक यह भी देखने का एक प्रयास है कि यथास्थितिवादी क्षेत्रीय व्यवस्था में बदलाव लाने वाले कारकों की एक नई श्रृंखला के उदय के साथ प्रत्येक राष्ट्र के बदलते घरेलू राजनीतिक परिदृश्य एक-दूसरे जुड़े हुए है। यह अध्ययन इस क्षेत्र में सांप्रदायिक राजनीति के परिमाण को बढ़ाने में नए रणनीतिक और राजनीतिक आग्रह, नए गठबंधन और काउंटर गठबंधन, तथा कई गैर-राज्य कार्यकर्ताओं के उद्भव की भूमिका को देखने का एक प्रयास भी है। चर्चाकर्ताओं ने इस क्षेत्र पर तुर्क साम्राज्य के पतन के प्रभाव के साथ-साथ अरब जगत के इतिहास के बारे में बात की। उन्होंने 2010 में अरब विप्लव के पीछे के कारणों और क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक खिलाड़ियों की भूमिका पर भी चर्चा की। उन्होंने टिप्पणी की कि पुस्तक में अरब जगत के भीतर सामाजिक दोष (सामाजिक और सांप्रदायिक दोनों) को प्रस्तुत किया गया है।

प्रो. एघोसा ई ओसाघे, महानिदेशक, नाइजीरियाई अंतर्राष्ट्रीय मामलों के संस्थान (एनआईआईए) का आह्वान, 8 मार्च 2022

नाइजीरियाई अंतर्राष्ट्रीय मामलों के संस्थान के महानिदेशक प्रो. एघोसा ई. ओसाघे ने 8 मार्च 2022 को आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक विजय ठाकुर सिंह से मुलाकात की। चर्चा में यूक्रेन में संकट, कोविड-19 महामारी और उभरती भू-राजनीति सहित कई मुद्दों को शामिल किया गया।

राजदूतों की गोलमेज चर्चा 'भारत और एसआईसीए देशों के बीच संबंध', 10 मार्च 2022

आईसीडब्ल्यूए ने 10 मार्च 2022 को 'भारत और एसआईसीए राष्ट्रों के बीच संबंध' विषय पर राजदूतों की प्रथम गोलमेज चर्चा की मेजबानी की। गोलमेज बैठक में राजदूत जियोवानी कैस्टिलो, भारत में ग्वाटेमाला के राजदूत, राजदूत क्लाउडियो अंसोरेना मोंटेरो, भारत में कोस्टा रिका के राजदूत यासील एलाइन्स बुरिलो रिवेरा, भारत में पनामा के राजदूत, राजदूत डेविड पुइग, भारत में डोमिनिकन गणराज्य के राजदूत और सुश्री इवोन बोनिला, मिशन की उप प्रमुख, अल सल्वाडोर, भारतीय दूतावास ने भाग लिया। चर्चा की अध्यक्षता राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने की। बंद दरवाजे का आयोजन चैथम हाउस रूल्स के तहत हुआ।

भारत-यूके स्ट्रैटेजिक फ्यूचर्स फोरम, 30-31 मार्च 2022

विदेश मंत्रालय; और विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास कार्यालय, यूनाइटेड किंगडम एंड पॉलिसी एक्सचेंज, यूके के सहयोग से भारतीय वैश्विक परिषद ने 30-31 मार्च 2022 को भारत-यूके स्ट्रैटेजिक फ्यूचर्स फोरम (आईयूएसएफएफ) का आयोजन किया। अधिकारियों, उद्योगपतियों, प्रौद्योगिकीविद, शिक्षाविद और नीति निर्माता, जो भारत-यूके रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए समर्पित हैं, का एक मंच बनाने के इरादे से ट्रैक 1.5 संवाद आयोजित किया गया था। 30 मार्च 2022 को उद्घाटन भाषण राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा दिया गया था। मुख्य भाषण भारत के विदेश सचिव श्री हर्षवर्धन श्रृंगला ने दिया। 31 मार्च 2022 को, उद्घाटन भाषण लॉर्ड डीन जॉनसन, निदेशक, पॉलिसी एक्सचेंज, यूके द्वारा दिया गया था और प्रमुख सम्बोधन सर फिलिप बार्टन, स्थायी अवर सचिव, विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास कार्यालय (एफसीडीओ) द्वारा दिया गया था। चर्चाओं को चार विषयों - अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और भारत-प्रशांत का भविष्य; रणनीतिक व्यापार साझेदारी में निवेश; प्रौद्योगिकी का भविष्य; और हमारे दो समाजों और संसदों के बीच एक जीवंत सेतु पर संरचित किया गया था।

आईयूएसएफएफ का मुख्य आकर्षण 31 मार्च 2022 को 'डॉ. एस. जयशंकर, विदेश मंत्री, भारत सरकार और माननीय एलिजाबेथ ट्रस सांसद, विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास मंत्री तथा प्रथम सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट, यूनाइटेड किंगडम के साथ बातचीत' थी। राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि मार्च 2021 में अनावरण किए गए 2030 के रोडमैप ने अगले 10 वर्षों के लिए भारत-ब्रिटेन संबंधों के लिए स्वर निर्धारित किया है। अक्टूबर 2021 में, विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर ने संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए विचार सृजित करने के लिए भारत-यूके स्ट्रैटेजिक फ्यूचर्स फोरम की घोषणा की थी। फोरम के दौरान संवाद में क्षेत्रीय और वैश्विक विकास पर विचारों का व्यापक आदान-प्रदान हुआ और इन घटनाक्रमों के राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक प्रभावों पर भी चर्चा की गई। भारत-ब्रिटेन संबंध साझा मूल्यों और व्यापक जनता के बीच संबंधों से पोषित होते हैं। लोकतंत्र और अग्रणी अर्थव्यवस्था होने के नाते, दोनों देशों में महामारी के बाद की दुनिया में प्रगति के लिए लचीलापन और ताकत है।

संवाद के सत्र 1 का शीर्षक "अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा एवं भारत-प्रशान्त का भविष्य" था और इसकी अध्यक्षता प्रोफेसर हर्ष पंत, निदेशक, स्टडीज एंड हेड स्ट्रैटेजिक स्टडीज प्रोग्राम, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, नई दिल्ली ने की थी। सत्र के वक्ताओं में सुश्री जेनी बेट्स, महानिदेशक, इंडो पैसिफिक, फॉरेन, कॉमनवेल्थ एंड डेवलपमेंट ऑफिस (एफसीडीओ); श्री विक्रम मिश्री, उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, भारत सरकार; एयर मार्शल एडवर्ड स्ट्रिंगर (सेवानिवृत्त) सीई, सीबीई, पूर्व महानिदेशक, रक्षा अकादमी और रक्षा स्टाफ के पूर्व उप प्रमुख; तथा डॉ जोरावर दौलत सिंह, एडजंक्ट फेलो, चीनी अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली शामिल थे।

सत्र 2 का विषय "सामरिक व्यापार साझेदारी में निवेश" था। इस सत्र की अध्यक्षता पॉलिसी एक्सचेंज के अध्यक्ष माननीय अलेक्जेंडर डाउनर एसी ने की और वक्ताओं में श्री दीपक शेट्टी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक जेसीबी इंडिया एवं अध्यक्ष, सीआईआई नेशनल काउंसिल ऑन कैपिटल गुड्स एंड इंजीनियरिंग; लॉर्ड बिलिमोरिया, अध्यक्ष, ब्रिटिश उद्योग परिसंघ एवं संस्थापक, कोबरा बीयर पार्टनरशिप; श्री अमित कपूर, यूके और आयरलैंड के हेड, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज; और श्री रानिल जयवर्धने सांसद, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री, यूके शामिल थे।

पहले दिन का समापन सत्र "भारत और ब्रिटेन: भविष्य की दिशा" विषय पर था और इसकी अध्यक्षता कार्नेगी इंडिया के निदेशक डॉ. रुद्र चौधरी ने की

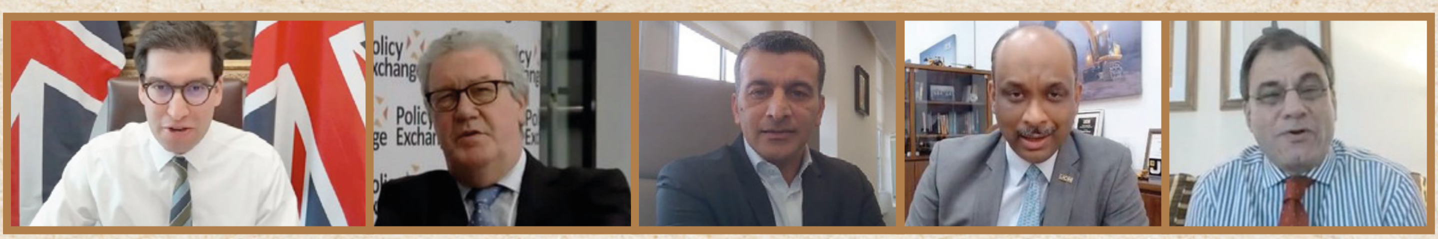

और वक्ताओं में भारत गणराज्य के ब्रिटिश उच्चायुक्त महामहिम एलेक्स एलिस सीएमजी और यूनाइटेड किंगडम में भारत की उच्चायुक्त महामहिम गायत्री इस्सर कुमार शामिल थे। वार्ता के दूसरे दिन के लिए, उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण लॉर्ड डीन गोडसन, निदेशक, पॉलिसी एक्सचेंज द्वारा दिया गया था और मुख्य भाषण सर फिलिप बार्टन, केसीएमजी

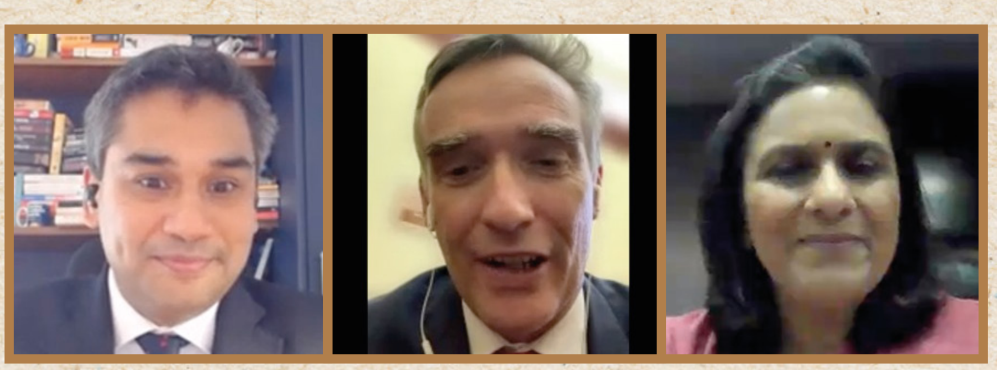

ओबीई, स्थायी अवर सचिव, विदेश, राष्ट्रमंडल एवं विकास कार्यालय (एफसीडीओ) द्वारा दिया गया था।

संवाद के तीसरे सत्र का शीर्षक "प्रौद्योगिकी का भविष्य" था और इसकी अध्यक्षता रिजर्व बैंक इनोवेशन हब के सीईओ श्री राजेश बंसल

ने की। सत्र के वक्ताओं में श्री सिड जाजोदिया, मुख्य बैंकिंग अधिकारी, रेवोल्ट; प्रोफेसर के. विजय राघवन, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार; श्री राजीव सूरी, सीईओ, इनमारसैट; और श्री भाविश अग्रवाल, संस्थापक और सीईओ, ओला शामिल थे।

सत्र 4 "हमारे दो समाजों और संसदों के बीच एक जीवंत सेतु" विषय पर था। सत्र की अध्यक्षता मेरिलबोन के माननीय लॉर्ड जॉनसन ने की। अपने वक्तव्य में डॉ. जयशंकर ने कहा कि यूक्रेन का पूर्ण प्रभाव अभी भी अस्पष्ट है। पुनर्संतुलन और

बहु-ध्रुवीयता एक प्रवृत्ति रही है। अफगानिस्तान से अमेरिका की वापसी और कोविड-19 महामारी एक झटका है। यूक्रेन एक नया झटका है। अमेरिका-चीन संबंधों का असर दूसरे देशों पर पड़ता है। परस्पर गहनता से जुड़ी हुई दुनिया में, सार्वजनिक भावना खुद को अधिक मजबूती से व्यक्त करती है। जनमत को आकार देने में निकटता जैसे कारक मायने रखते हैं। अफगानिस्तान के घटनाक्रम का भारत में जनमत पर प्रभाव पड़ा है। शायद, यूरोप में इसका उतना प्रभाव नहीं पड़ा। भारत-ब्रिटेन सहयोग पर उन्होंने कहा कि हमारे बीच संबंधों का एक निश्चित तर्क है। ये संबंध कुछ अन्य देशों के विरोध के उद्देश्य से नहीं हैं। ब्रेक्सिट जैसे बड़े बदलावों के बावजूद हमने अपने संबंधों को और अधिक समकालीन तरीके से देखने की कोशिश की है। जनता के बीच आदान-प्रदान, व्यापार और प्रौद्योगिकी संबंध गहरे हो रहे हैं। स्वास्थ्य और विज्ञान सहयोग के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। रक्षा क्षेत्र में सहयोग के क्षेत्र - भारत और ब्रिटेन के बीच अभिसरण है। हमारे पास रक्षा संबंधों का एक लंबा इतिहास है। वर्तमान में, भारत में, "मेक इन इंडिया" पर जोर दिया जा रहा है। हम बहुत सारे ग्लोबल सोर्सिंग भी करते हैं। सह-निर्माण में रुचि बहुत प्रबल है।

ब्रिटेन की विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास मामलों की मंत्री माननीया एलिजाबेथ ट्रस ने अपनी टिप्पणी में कहा कि ब्रिटेन हिंद-प्रशांत और भारत के

लिए प्रतिबद्ध है। भारत के साथ संबंध महत्वपूर्ण हैं क्योंकि हम एक असुरक्षित दुनिया में रह रहे हैं। हमें उस संदेश के बारे में व्यापक रूप से सोचने की जरूरत है जो यूक्रेन युद्ध से दुनिया को मिल रहा है। रूस पर प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं और यूक्रेन को हथियारों की आपूर्ति की जा रही है। खाद्य सुरक्षा और ऊर्जा सुरक्षा जैसे क्षेत्रों पर यूक्रेन के प्रभाव दूरगामी हैं। समान विचारधारा वाले देशों को मिलकर काम करने की जरूरत है। भारत के साथ संबंधों के विषय में, माननीया ट्रस ने कहा कि भारत एक तकनीकी महाशक्ति है, और यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सहयोग के लिए एक आशाजनक क्षेत्र है। एक लोकतंत्र के रूप में, हम इन क्षेत्रों में मानदंड निर्धारित कर सकते हैं। एक मजबूत भारत, एक मजबूत यूके और एक मजबूत भारत-ब्रिटेन संबंध दुनिया के लिए उत्तम है। भारत ब्रिटेन का एक प्रमुख भागीदार है क्योंकि उसे भारत पर भरोसा है। हमें भरोसेमंद दोस्तों के साथ काम करना होगा।

आउटरीच कार्यक्रम

"21 वीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और वैश्विक आतंकवाद विरोधी प्रतिक्रिया" पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (वर्चुअल और भौतिक), 10-12 जनवरी 2022

उसानास फाउंडेशन ने 10 से 12 जनवरी 2022 तक भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) के सहयोग से महाराणा प्रताप वार्षिक सुरक्षा संवाद का आयोजन "21वीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और वैश्विक आतंकवाद विरोधी प्रतिक्रिया" विषय पर किया गया। रिसर्च फेलो डॉ. अन्वेषा घोष ने पूर्व राजनयिकों, अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, इज़राइल और अफगानिस्तान के प्रतिभागियों के साथ इस कार्यक्रम में परिषद का प्रतिनिधित्व किया।

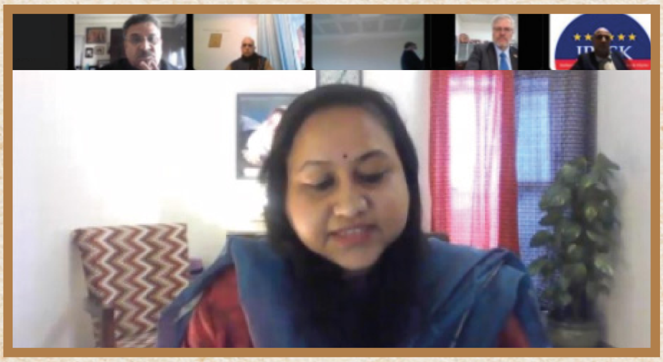

भारत-चीन संबंध: चुनौतियां और अवसर, 24-25 फरवरी 2022

बुद्ध विद्यापीठ डिग्री कॉलेज, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश में 24-25 फरवरी 2022 को भारत-चीन संबंध: चुनौतियां और अवसर विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. सुदीप कुमार, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए ने आईसीडब्ल्यूए और इसके आउट्रेच कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देते हुए राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और मोदी युग में भारतीय विदेश नीति और चीन के विषय में बात की।

विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हुए, यह कहा गया कि भारत और चीन को अपने-अपने देशों में आम लोगों की बेहतरी के लिए अशांत संबंधों के चक्र को दूर करने के लिए अपने सभ्यतागत ज्ञान का उपयोग करने की आवश्यकता है। इस संबंध में अकादमिक, मीडिया, थिंक टैंक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की भूमिकाओं को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश के अलावा छह भारतीय राज्यों, अर्थात् मिजोरम, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, दिल्ली और बिहार से 45 प्रतिनिधियों ने भौतिक और वर्चुअल मोड में भाग लिया।

आईसीडब्ल्यूए प्रकाशन

मुद्दा संक्षिप्त

1. आकांक्षा ठाकुर, जर्मन चांसलर के रूप में एंजेला मर्केल के 16 वर्षों पर एक नज़र (04 January 2022)
2. डॉ. सुदीप कुमार, चीन-मंगोलिया-रूस आर्थिक गलियारा: एक आकलन (05 January 2022)
3. मो. मुदस्सिर कमर, चीन-फिलीपींस दक्षिण चीन सागर विवाद, पीसीए फैसला और मध्यस्थता के बाद के संबंध। (05 January 2022)
4. डॉ. हिमानी पन्त, भारत-अमेरिका-चीन त्रिभुज में रूस की कूटनीति (06 January 2022)
5. डॉ. अंकिता दत्ता, यूक्रेन संकट पर यूरोपीय प्रतिक्रियाएँ (07 January 2022)
6. डॉ. अन्वेषा घोष, अफगान नागरिक समाज और पश्चिमी अधिकारियों ने ओस्लो में तालिबान प्रतिनिधिमंडल के साथ वार्ता की (05 February 2022)
7. डॉ. फज्जुर रहमान सिदिद्की, तुर्की-अरब संबंधों की गतिशीलता बदलना: एक सिंहावलोकन (08 February 2022)
8. डॉ. तेम्जेंमेरें आओ, फिलीपींस में आगामी चुनाव (09 February 2022)
9. डॉ. अंकिता दत्ता, ब्रेक्सिट का एक वर्ष - स्थितियां क्या हैं? (11 February 2022)
10. डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, चिली में एक नए संविधान की ओर- राष्ट्रपति के लिए चुनौतियां गैब्रियल बोरिक का चुनाव (15 February 2022)
11. डॉ. स्तुति बनर्जी, बाइडेन का राष्ट्रपति पद का एक वर्ष (15 February 2022)
12. डॉ. समथा मल्लेम्पति, श्रीलंका के युद्ध के बाद सुलह: बढ़ती चिंताएं (16 February 2022)
13. डॉ. श्रीपति नारायणन,आसियान की म्यांमार दुविधा (16 February 2022)
14. डॉ. संजीव कुमार, चीन का मध्य एशिया शिखर सम्मेलन (17 February 2022)
15. डॉ. अतहर जफर, भारत-मध्य एशिया शिखर सम्मेलन: क्षेत्र के साथ जुड़ाव में एक मील का पत्थर (17 February 2022)
16. डॉ. जोजिन वी. जॉन, उत्तर कोरिया: किम जोंग-उन के तहत एक दशक (21 February 2022)
17. डॉ. राहुल नाथ चौधुरी, पाकिस्तान में आर्थिक संकट का कारण क्या था? (23 February 2022)
18. आकांक्षा ठाकुर ईरान परमाणु समझौते की वार्ता (जेसीपीओए) की बहाली - यूरोपीय भूमिका का आकलन। (25 February 2022)
19. डॉ. अन्वेषा घोष, जब्त की गई अफगानिस्तान की संपत्ति 9/11 के पीड़ितों और अफगानिस्तान में राहत कार्यों के बीच बांटने का बाइडेन का आदेश (03 March 2022)
20. डॉ. हिमानी पन्त, यूक्रेन संकट और उसके प्रभाव (03 March 2022)
21. डॉ. जोजिन वी जॉन, व्यावहारिक और संभावित विदेश नीति के बीच दक्षिण कोरिया में राष्ट्रपति चुनाव (07 March 2022)
22. डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य, पाकिस्तान की राष्ट्रीय सुरक्षा नीतिः मूल्यांकन (08 March 2022)
23. डॉ. पुनीत गौर रूस - यूक्रेन संकट और मध्य एशियाई देशों के लिए आशय (10 March 2022)
24. डॉ. तेशु सिंह, राष्ट्रपति जो बिडेन के तहत अमेरिका-चीन संबंध (11 March 2022)

25. डॉ. लक्ष्मी प्रिया, यूक्रेन संकट पर खाड़ी की प्रतिक्रियाएँ (21 March 2022)
26. डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय, द्वितीय मोदी-मॉरिसन शिखर सम्मेलन: इंडो-पैसिफिक में भारत-ऑस्ट्रेलिया रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देना (24 March 2022)

दृष्टिकोण

1. डॉ. अरशद, मोरक्को इजरायल के साथ एक खुले रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर करने वाला पहला अरब देश बन गया (07 January 2022)
2. डॉ. स्तुति बनर्जी, वर्ष 2021 में भारत-अमेरिका संबंध (10 January 2022)
3. डॉ. संकल्प गुर्जर, अफ्रीका के प्रक्षिप्त भाग में अस्थिरता की वापसी (14 January 2022)
4. डॉ. संजीव कुमार, 2022 के लिए चीन की आर्थिक चुनौतियां और प्राथमिकताएं (22 January 2022)
5. डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय, गतिशील रणनीतिक वातावरण के बीच हिंद महासागर द्वीपों तक भारत की पहुंच (25 January 2022)
6. डॉ. अतहर जफर, कजाकिस्तान में अभूतपूर्व स्थिति: कारण और निहितार्थ (11 February 2022)
7. डॉ. लक्ष्मी प्रिया, यूएई पर हौथी ड्रोन और मिसाइल हमलों के निहितार्थ (11 February 2022)
8. डॉ. अरशद, लीबिया 2021 के राष्ट्रपति चुनाव का आयोजन करने में विफल क्यों रहा? (15 February 2022)
9. डॉ. संकल्प गुर्जर, माली और अफ्रीका में महान शक्ति राजनीति (17 February 2022)
10. डॉ. श्रीपति नारायणन, एक महासागर शिखर सम्मेलन और इसके निहितार्थ (24 February 2022)
11. डॉ. फज्जुर रहमान सिद्दीकी, इथियोपिया ने जीईआरडी में बिजली उत्पादन शुरू किया: एक आकलन (04 March 2022)
12. डॉ. अन्वेषा घोष, भारत ने पाकिस्तान के रास्ते अफगानिस्तान को भेजी मानवीय सहायता (09 March 2022)
13. डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, चीन के जनवादी गणराज्य के प्रति अर्जेंटीना का हालिया रुख (14 March 2022)
14. डॉ. अरशद, मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फ़तह अल-सीसी की चीन यात्रा: एक अवलोकन (14 March 2022)
15. डॉ. समथा मल्लेम्पति, मालदीव-ऑस्ट्रेलिया: उभरता हुआ भारत-प्रशांत सहयोग (22 March 2022)
16. डॉ. श्रीपथि नारायणन, प्रेसिडेंशिअल फ्लीट रिव्यू और अभ्यास मिलन की प्रासंगिकता (23 March 2022)
17. डॉ. स्तुति बनर्जी, भारत और कनाडा आर्थिक संबंध: मुक्त व्यापार समझौते को फिर से शुरू करना (23 March 2022)

सप्रू हाउस पेपर

1. डॉ. एस. कृष्णकुमार, ग्लोबल करेंट एकाउंट इम्बैलेंसेज सिंस द 2008 फाइनेंशियल क्राइसिस

अतिथि कॉलम

1. राजदूत योगेन्द्र कुमार, फिलीपीन्स एण्ड द साउथ चाइना सी (07 जनवरी 2022)
2. डी. कुर्बनोब एण्ड श्री खोशिमोव, ऑन द पोटेंशियल ऑफ "सेंट्रल एशिया-इंडिया" कोऑपरेशन (27 जनवरी 2022)

यूएनएससी में भारत

1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत: जनवरी 2022 के लिए मासिक रीकैप, संयुक्त राष्ट्र में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि राजदूत अशोक कुमार मुखर्जी द्वारा एशिया, अफ्रीका, विषयगत मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए
2. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत: फरवरी 2022 के लिए मासिक रीकैप, संयुक्त राष्ट्र में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि राजदूत अशोक कुमार मुखर्जी द्वारा यूक्रेन, एशिया, अफ्रीका, विषयगत मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए।

पुस्तकें

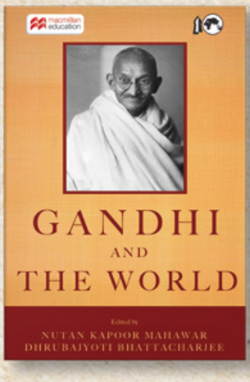

Gandhi and The World,

Edited by Nutan Kapoor Mahawar & Dhrubajyoti Bhattacharjee,

(Indian Council of World Affairs; Macmillan Education, 2022)

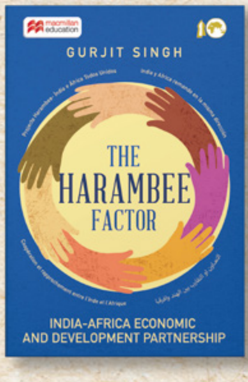

The Harambee Factor: India-Africa Economic and Development Partnership

By Gurjit Singh,

(Indian Council of World Affairs; Macmillan Education, 2022)

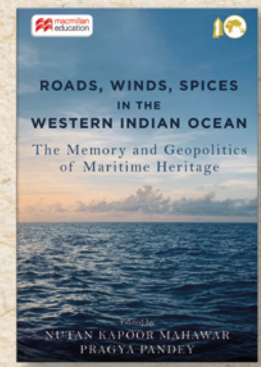

Road, Winds, Spices in the Western Indian Ocean: The Memory and Geopolitics of Maritime Heritage

Edited by Nutan Kapoor Mahawar & Pragya Pandey,

(Indian Council of World Affairs; Macmillan Education, 2022)

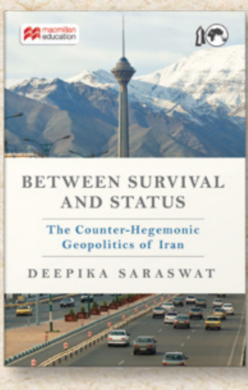

Between Survival and Status: The Counter-Hegemonic Geopolitics of Iran

By Deepika Saraswat,

(Indian Council of World Affairs; Macmillan Education, 2022)

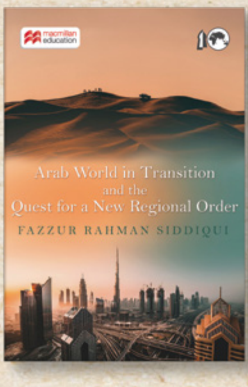

Arab World in Transition and the Quest for a New Regional Order

By Fazzur Rahman Siddiqui,

(Indian Council of World Affairs; Macmillan Education, 2022)

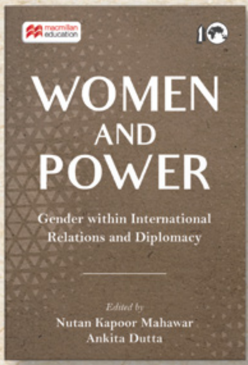

Women and Power: Gender within International Relations and Diplomacy

Edited by Nutan Kapoor Mahawar & Ankita Dutta

(Indian Council of World Affairs; Macmillan Education, 2022)

इण्डिया क्वार्टरली
ए जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल अफ़ेयर्स
खंड 78, अंक 1,
जनवरी-मार्च 2022

संपादकीय

जैसे-जैसे दुनिया कोविड-19 महामारी की बेड़ियों से उभरी है, अब कुछ व्यापक निष्कर्ष स्पष्ट हैं: कि महामारी वास्तव में एक वैश्विक मामला था जिसने राष्ट्रवाद के चरम और बदसूरत रूपों को जन्म दिया, और शासन के वर्तमान स्वरूपों पर प्रश्नचिह्न लगा दिए। जैसा कि इस अंक में कोविड-19 पर चर्चा करने वाले लेखों से स्पष्ट होता है, प्रतिस्पर्धी राष्ट्रवाद ने वैश्वीकरण को एक घातक झटका दिया, जिसे पिछले 30 वर्षों में कड़ी मेहनत से तैयार किया गया था। प्रत्येक देश महामारी से कैसे निपटता है, इस पर शुरू से ही कार्रवाई कम हुई है। महामारी का केंद्र चीन चेतावनियां देने में सुस्त था और महामारी की उत्पत्ति के बारे में वैध प्रश्नों के लिए 'वुल्फ वारियर कूटनीति' के साथ प्रतिक्रिया करता था; वैश्विक प्रतिक्रिया के लिए डब्ल्यूएचओ के आह्वान की व्यापक रूप से अवहेलना की गई; और राज्यों ने स्वयं जीवन रक्षक टीकों के लिए निधि देने और आरक्षित करने के लिए सभी मानवीय सिद्धांतों की अवहेलना की, जिससे लोकप्रिय शब्दावली में एक नए वाक्यांश का जन्म हुआ: वैक्सीन राष्ट्रवाद। इससे भी बुरी बात यह है कि दुनिया भर के लोगों को शासन की ढुलमुल नीति का खामियाजा भुगतना पड़ा जिससे महामारी की मानवीय लागत से निपटने की क्षमता प्रभावित हुई- शटडाउन से लेकर बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं की भयावह अनुपस्थिति तक। सभी देश समान रूप से प्रभावित नहीं हुए; स्पष्ट रूप से, घरेलू राजनीति जितनी गंदी थी, वहां उतनी ही बुरी स्थिति थी। अफ्रीका में, वैक्सीन राष्ट्रवाद से यह महाद्वीप सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ और वैश्विक प्रतिक्रिया को मजबूत करने में विफल रहा, केवल तेल जैसे जिंसों की कीमतों में गिरावट से डब्ल्यूएचओ के स्वास्थ्य दिशानिर्देशों को लागू करने में राज्यों की क्षमता में वृद्धि हो सकी।

फिर भी, जैसा कि कुछ लेखों से स्पष्ट होता है कि इस महामारी ने शहरों और समुदायों को तबाह कर दिया, राज्यों ने भी इससे सीख लेने के लिए परिश्रम किया। अनेक एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में, राज्य की नीति ने अन्यत्र की अपेक्षा भारी मृत्यु दर पर रोक लगाई। आश्चर्य नहीं कि भारत-प्रशांत में क्वाड जैसी नई रणनीतिक संरचनाएं टीकों के विकास और वितरण पर 'रणनीतिक परोपकारिता' विकसित कर रही हैं, और नीति को सिंक्रनाइज़ करने के लिए डब्ल्यूएचओ के दवा और चिकित्सा उपकरणों तक पहुंच के उद्देश्यों के साथ पेटेंट अधिकारों पर भारत और दक्षिण अफ्रीका जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं द्वारा पुराने वैश्विक आर्थिक संस्थानों को ध्यान में रखा जा रहा है।

कोविड पर चर्चा से हटकर, इस अंक के अन्य लेख श्रीलंका में भारत की नीतियों के इतिहास और उद्देश्यों तथा किर्गिस्तान में चीन की बढ़ती उपस्थिति का आकलन अनौपचारिक व्यवस्थाओं और सैन्य ठेकेदारों, देश में रूसी उपस्थिति के बावजूद, और वास्तव में मध्य एशिया में के माध्यम से अपनी आंतरिक सुरक्षा और नागरिकों के डेटा तक पहुंच और नियंत्रण के माध्यम से करते हैं। अंतिम लेख भविष्य की बहस की ओर इशारा करता है: राज्य नियंत्रण और क्रिप्टोकरेंसी की पहेली। लेखक पूछता है, क्या जॉन मेनार्ड कीन्स के सुप्रा-नेशनल करेंसी के विचार को 'विनिमय के माध्यम' के रूप में पुनर्जीवित करना संभव है और इसे अपनाने तथा उपयोग के लिए एक 'व्यवहार्य राज्य नीति' क्या होगी?

स्पष्ट रूप से, कोविड-19 पर लेख तथा शेष चीजें राष्ट्रीय हितों और प्रभाव के उलझे हुए जाल को दर्शाते हैं और समानता के लिए और एक विविध दुनिया को प्रतिबिंबित करने के लिए वैश्विक संस्थानों और तंत्रों के पुनर्गठन पर बल देते हैं।

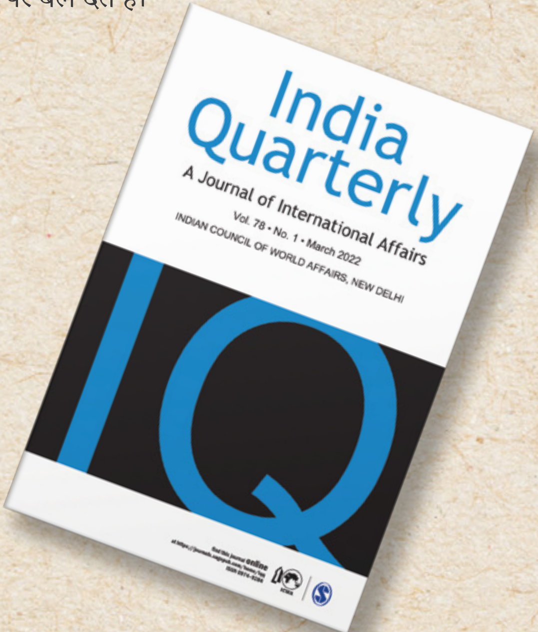

मधु भल्ला
एडिटर, इण्डिया क्वार्टरली

आईसीडब्ल्यूए के बारे में

भारतीय वैश्विक परिषद् (ICWA) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ एच.एन. कुंजरु के नेतृत्व में प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान और सोच के भंडार के रूप में कार्य करना था। परिषद आज एक आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति शोध करती है। यह सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज परिचर्चाओं, व्याख्यानों सहित बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला नियमित रूप से आयोजित करती है और कई प्रकाशनों का प्रकाशन करती है। इसमें एक बहुत सी पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय, एक सक्रिय वेबसाइट है, और यह 'इंडिया क्वार्टरली' पत्रिका प्रकाशित करती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर समझ को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित करने के लिए आईसीडब्ल्यूए ने अंतरराष्ट्रीय थिंक टैंकों और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन किए हैं। परिषद् की भारत में अग्रणी शोध संस्थानों, थिंक टैंकों और विश्वविद्यालयों के साथ भी साझेदारी है।

मेंटर	:	राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली
संपादक	:	श्रीमती नूतन कपूर महावर, संयुक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली
प्रबंध संपादक	:	डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए
सहायक संपादक	:	डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, अध्येता, आईसीडब्ल्यूए
सहायक	:	रिसर्च इंटर्न सुश्री पूजा सिंह।

हमसे जुड़ें

/Sapru.House @ICWA_NewDelhi /ICWA_NewDelhi www.icwa.in

आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रक

वेबसाइट: http://www.icwa.in; दूरभाष नं 011-23317246 फैक्स नंबर 011-23310638